Chapter - 10

Conclusion

दशम् अध्याय

उपसंहार

x:x:x:x:x:x

कर्मोत्साह की प्रवृत्ति परिपक्व होकर वीर रस का रूप धारण करती है. मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण चेतना, आकांक्षा तथा फल प्राप्ति की तीव्र लालसा व्यक्ति को काम में प्रवृत्त करती है और आस्थावादी चेतना अनुकूल तथा प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में इसे कर्म प्रवृत्त बनाते हैं. आदि काल से लेकर मानव सभ्यता एवं संस्कृति ने अपनी भीतरी और बाहरी यात्रा के जो अनेकविध आयाम पार किये हैं उनके मूल में यही तथ्य काम करता है. आदि मानव प्रतिकूल प्राकृतिक शक्तियों से संघर्ष करता हुआ अपने कर्म सामर्थ्य को विकसित करके प्रगति के पथ पर आगे बढ़ा है. अतः जीवन की गतिविधियों में कर्मोत्साह, साहस अथवा वीरता एक निर्णायक एवं निर्मायक तत्व के रूप में काम करती है ।

उपर्युक्त परिस्थिति के कारण वीरता के भावों से युक्त काव्य की सभी युगों में रचना न्यूनाधिक रूप में स्वाभाविक है किन्तु भाव या विचार किसी विशेष परिवेश की देन होते हैं और परिवेश देश-विशेष अथवा क्षेत्र-विशेष की समसामायिक जीवन चेतना द्वारा निर्मित होता है. अतः युग विशेष के संदर्भ में किसी की साहित्यिक प्रवृत्ति का अध्ययन उसे सार्थकता प्रदान करता है. बौद्धिक **चेतना** से प्रधान आधुनिक युग में वीर रस की कविताएँ एक संतुलित एवं गंभीर अनुशीलन की अपेक्षा रखती है,क्योंकि आधुनिक युग का आरंभ युद्धों से नहीं नवजागरण से हुआ है . आधुनिक युग के नवजागरण में राजा राम मोहनराय ने सती प्रथा, बाल विवाह, मूर्तिपूजा, आदि प्राचीन रूढ़ियों का खण्डन कर संस्कृति के बदलने युगानुसार आधुनिक स्वरूप प्रदान किया. महात्मा गांधी जैसे देशभक्त नेता अछूतोद्धार का व्रत लेकर आगे आये. इस पुनर्जागरण ने सांस्कृतिक आंदोलनों के माध्यम से जनता को जाग्रत किया. अंग्रेजी शिक्षा के मार्ग प्रशस्त कर हमारी रूढ़ि ग्रस्तता, कूपमंडूकता का मजाक उड़ाया. इस समय

स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व की भावना से नई क्रांति आई जो मानसिक दासता से मुक्त कराने का सफल माध्यम बनी. दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक जैसे भारतीयता के समर्थक नेताओं के उपदेशों के फलस्वरूप वैदिक धर्म, संस्कृति, प्राचीनादर्श तथा इतिहास का अधिक उज्ज्वल रूप सम्मुख आया. हिन्दी साहित्य में भी पूर्व पुरुषों की भूलें अथवा न्यूनताओं की अपेक्षा अतीत के उज्ज्वल पक्ष का विशुद्ध रूप में प्रतिपादन किया गया. अतीतकालीन आध्यात्मिक, नैतिक, भौतिक उत्कर्ष का प्रांजल रूप प्रस्तुत किया गया. इसमें सर्वाधिक बल वीर पुरुषों के ओजस्वी चरित्रों के वर्णन को दिया गया. अतीत गौरव के वर्णन में हिन्दी के मनीषी कवियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के पास केवल भौगोलिक एकता ही नहीं प्रत्युत उनके धर्म के मूल रूप में भी एकता है.

रामायण, महाभारत, गीता आदि आदर्श ग्रंथ है तो राम-कृष्ण, अर्जुन, प्रताप, गुरुगोबिन्द सिंह, शिवाजी, पृथ्वीराज आदि आदर्श पुरुष हैं. अतीत गौरव की भावना ने आत्म विश्वास को जन्म दिया. यह गौरव गान भी इस एक विशेष उद्देश्य से किया गया था कि देशवासी अतीत के उज्ज्वल प्रकाश में अपनी वर्तमान दुर्दशा के अंधकार की सघनता से भली भाँति परिचित हों.

इन सब परिस्थितियों ने कवियों पर अत्याधिक प्रभाव डाला. परमाणु की शक्ति की थाह ली जा सकती है, परन्तु वाणी की शक्ति का कोई पारावार नहीं. इसकी शक्ति अनन्त और कल्पनातीत है. इतिहास साक्षी है कि वाणी के स्रष्टा कवियों ने समय-2 पर अपनी उद्बोधक एवं ओजस्वी वाणी द्वारा निष्प्राण राष्ट्र में नव-जीवन और नवचेतना का संचार किया, पराजय को विजय में बदला

और असंभव को संभव कर दिखाया. असंख्य अवसरों पर उन्होंने आततायियों से लोहा लिया और सर्व साधारण को स्वाधीनता एवं सम्मान की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा दी . कुरुक्षेत्र में जब कौरवों एवं पांडवों की सेनायें आमने- सामने डट गयीं तो महारथी अर्जुन डोल गया और मोह ने उसे किंकर्तव्य विमूढ़ बना दिया. उस समय जिस शक्ति ने उसका मोह दूर किया और उसे अन्याय और अत्याचार के उन्मूलन के लिए गांडीव उठाने की प्रेरणा दी, वह भगवान की अमर वाणी ही थी.

राजपूतों के शौर्य एवं बलिदान का स्त्रोत राजस्थान के चारण कवि एवं चन्द्रबरदायी जैसे वीर रस के सुकवि ही थे. समर्थ गुरु रामदास और महाकवि भूषण की वाणी से ही प्रेरणा लेकर मरहठे वीर आंधी की तरह उठे और उन्होंने मुगल साम्राज्य को धराशायी कर दिया. गुरुओं की अमर वाणी ने पंजाब वासियों में ऐसी चेतना पैदा की, जिसने इतिहास की दिशा ही बदल डाली. यदि सिक्ख सूरमे सिर हथेली पर रखकर दुधारी तलवारों को चमका सके या आरों से चीरे जाने पर या फांसी के फंदों को भी चूमते समय सत्य निष्ठा से मुस्कराते रहे, तो इसका एकमात्र कारण यही कहा जा सकता है कि उन्हें राष्ट्र हित में सर्वस्व न्यौछावर करने वाले गुरु गोबिन्दसिंह से आत्मोत्सर्ग की शिक्षा मिली थी. कौन नहीं जानता की आज भी उत्तर प्रदेश के वीर सैनिक जब जगनिक की अमर कृति आल्हाके बोल सुनते हैं तो उनकी आंखों से अंगारे बरसने लगते हैं. चीन एवं पाकिस्तान जैसे विदेशियों ने जब आक्रमण किया तो कवियों का परम्परागत स्वाभिमान जागृत हुआ, उनकी धमनियाँ फड़क उठी और उनके आग उगलने वाले काव्य ने देश में स्वाधीनता की रक्षा के लिए तन-मन-धन बलिदान करने का वातावरण तैयार कर दिया.

विवेच्य काल की सीमा सन् 1920 से लेकर 1965 ई0 तक की है. हिन्दी की भाव चेतना की परिस्थितियाँ भाव और विचार को उत्पन्न करने में सहायक होने के साथ-2 देश की परिस्थितियों ने भी अनेक मोड़ लिये हैं इसका प्रारंभ नवजागरण से हुआ और अंत विदेशी आक्रमणों से. इसी प्रकार साहित्य में भी नवीन चेतना के आयाम दृष्टिगोचर हुए, एक नवीन राह निकली, उसकी नवीनता के ही कारण पहले लोगों ने उसके प्रति अनास्था प्रकट की, धीरे-2 लोगों की हिचक मिटी. इस राह पर चलकर, इसे अपनाकर नयी कविता को अभिव्यक्ति क्षम भाषा मिली और दूसरा महान पदार्थ मिला मानव का खोया हुआ किंवा तिरोहित व्यक्तित्व. इसके पूर्व काव्य प्रायः परोक्षानुभूतिनिरूपक हुआ करते थे, कवि अपने व्यक्तित्व को वर्ण्य व्यक्तित्व में घुला मिला दिया करता था, छिपा देता था, स्वयं प्रत्यक्ष होता नहीं था. छायावाद साहस पूर्वक कवि व्यक्तित्व को लेकर सामने आया और उसने कवि वर्ग में नूतनता के प्रति प्रेम को भी जगाया. द्विवेदी युग के समाप्त होते ही इसकी गहरी छाप पड़ गयी और अनेक प्रयत्नों से खड़ी बोली के काव्यों की प्रतिष्ठा स्थापित हो चली. यद्यपि छायावाद की मूल चेतना प्रेम एवं सौन्दर्य की है तथापि इस समय क्रांतिकारियों के प्रयत्न एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्ष हो रहा था. इसने भावुक मनों को एक प्रेरणा दी और इस भावुकता ने परिस्थिति को प्रभावित किया. छायावाद या राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि प्रसाद जी, गुरुभक्त सिंह भक्त, दिनकर, वियोगी हरि, सुभद्राकुमारी चौहान, आदि कवि है. हिन्दी के आधुनिक वीर काव्यों की दृष्टि से यदि विचार किया जाये तो यह कहा जा सकता है कि छायावादी काव्य है में स्वतः यथार्थ के प्रति सचेष्ट आग्रह, सामाजिक यथार्थ की प्रतिष्ठा, आचंलिक जीवन के सजीव चित्र, राष्ट्रीयता में दृढ़ विश्वास के प्रखर स्वर स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है.

इस काल की वीरता विध्वंस को लक्ष्य करके नहीं चलती, न आज शत्रु को पीड़ित, अपमानित या पद, दलित करने में ही हम अपने वीर काव्यों की इतिश्री समझते हैं. शत्रु के व्यक्तित्व के विरुद्ध नहीं, उनकी नीति के विरुद्ध हमारे युद्ध की घोषणा होती है. इसके अतिरिक्त इस युग में वीरत्व का प्रबल रूप उन रचनाओं में भी मिलता है जहाँ आत्म बलिदान के प्रति उत्साह व्यक्त किया गया है एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को भी पूर्णरूपेण उभारने का प्रयास किया गया है.

छायावाद युग के समाप्त होते होते एक नये युग की भूमि में हिन्दी कविता का पदन्यास होता है. इस नये युग ने कवि को व्यक्ति की परिधि से निकालकर जन साधारण के भीतर जाने को प्रेरित किया. इस युग की चेतना वैचारिक क्रांति की थी, किसानों एवं मजदूरों की ओर उनकी दृष्टि खिंची चली गयी. इस युग के काव्यों में चित्रित वीर भावना का प्रबल रूप उन रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है जहाँ बलिदान की भावना के प्रति उत्साह दिखाया गया है. इसके अतिरिक्त देश भक्ति से ओतप्रोत राष्ट्रीय काव्य कृतियों की भी रचना पर्याप्त मात्रा में हुई.

इस तथ्य कथित प्रगतिवाद के उपरान्त प्रयोगवाद की चेतना प्रारंभ होती है. श्रीकृष्ण सरल, आनन्दकुमार, विश्वनाथ पाठक, मोहनलाल महतो, जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, केदारनाथ " प्रभात " आदि प्रमुख कवि हैं. हिन्दी के काव्य क्षेत्र में ये उपर्युक्त परिवर्तन, जिनका हम वर्णन विस्तार से कर चुके हैं, देखते- देखते हो गये. इस काल में यथार्थ के प्रति सचेष्ट आग्रह, राष्ट्रीयता के प्रति दृढ़ संकल्प एवं विश्वास दिखाई देता है. इस प्रकार सन् 1920 से लेकर 1965 तक रचित वीर काव्यों की एक सशक्त परंपरा प्रकाश में आती है जिसमें सभी प्रकार के काव्य रूपों के साथ-2

विषय वैविध्य भी है. इनमें युगीन चेतना समग्रता के साथ अंकित हुई है ।

पूर्ववर्ती पृष्ठों में क्रमशः छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और स्वातंत्र्योत्तर युगों की काव्य चेतना के परिप्रेक्ष्य में वीर काव्यों की अवस्थिति पर जो विवरण प्रस्तुत किया जा चुका है उससे यह महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आता है कि इतर काव्यों की चेतना इन कलागत अथवा प्रयोजन आंदोलनों से अवश्य मोड़ लेती रही है किन्तु वीर काव्यों की अखण्ड परंपरा में कहीं व्यवधान दृष्टिगोचर नहीं होता. आशा है कि इतर काव्यों की चेतना इन कला अथवा प्रयोजन आंदोलनों से अवश्य मोड़ लेती रही, किन्तु वीर काव्यों की अखण्ड परंपरा में कहीं भी व्यवधान नहीं दिखाई पड़ता ।

द्वितीय उल्लेखनीय तथ्य यह सामने आता है कि वीर काव्यों की परंपरा की अक्षुण्णता के आधारभूत कारणों पर यदि विचार किया जाय तो हम यह कह सकते हैं कि सन 1920 से लेकर 15 अगस्त 1947 तक का कालखण्ड युगीन परिवेश के दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आंदोलनों और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किये गये क्रांतिकारियों के अभियानों का काल है. इस कालखण्ड में हिन्दी कविता को चाहे कई काव्यान्दोलनों से गुजरना पड़ा किन्तु कवि युगगत चेतना से अप्रभावित हुए बिना नहीं रहा. उक्त राष्ट्रीय चेतना के साथ-2 सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान की चेतना साम्यवादी जीवन दृष्टि को भी अपनी चेतना में रंजित करके भी प्रस्तुत हुई. " रश्मिरथी ", रावण ", " अंगराज ", " सेनापति कर्ण ", " कर्ण " आदि काव्य कृतियाँ इसके सशक्त प्रमाण है. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हुए विदेशी आक्रमणों ने भी राष्ट्रीय

सांस्कृतिक चेतना को नये संदर्भ के साथ प्रस्तुत किया, जिसके फलस्वरूप अनेक मुक्तक एवं " सूली और शान्ति " जैसे खण्ड काव्य प्रकाश में आये ।

रचना परिमाण के दृष्टिकोण से यदि विचार किया जाय तो इस सम्पूर्ण कालखण्ड में लगभग 13 महाकाव्य, 16 खण्डकाव्य एवं अगणित मुक्तक रचनाएँ जिनका इतिहास ग्रंथों में यत्र तत्र उल्लेख है, प्राप्त होती है. रचनाओं की वस्तुस्थिति के इससे कहीं अधिक होने का अनुमान स्वाभाविक एवं तथ्य परक ही कहा जायेगा. समय और विस्तार के भय से ही इसको कालखण्ड की सीमा में बांधने का प्रयास किया है. अतः यह कहना तो कठिन है कि हिन्दी वीर काव्यों की समानुपातिक स्थिति क्या है, किन्तु क्या रचनाओं की संख्या, अनेक महत्वपूर्ण काव्य कृतियों की उपलब्धियाँ, कला चेतना आदि सभी दृष्टिकोण से यह एक महत्वपूर्ण काव्य धारा के रूप में प्रतिष्ठित है ।

पहला विदेशी आक्रमण सन् 1962 में हमारे मित्र देश चीन का हुआ, इस आक्रमण से हमारे व्यामोह को धक्का लगा. हमारी पराजय अवश्य हुई परन्तु ये चीनी भाई हमें पाठ पढ़ाकर यह बात प्रकाश में ले आये हैं जिसे अब भूल न जाना चाहिए. हमें अब यह गहराई से अनुभव हुआ कि सुदृढ़ सैन्य व्यवस्था, शस्त्र संयम, सुरक्षा योजना तथा उत्पादन सभी का समान रूप से महत्व हैं. इस समय अनेक वीर रस की मुक्तक रचनायें प्रकाश में आयी हैं. पंजाब सरकार के " शंखनाद " एवं " रणभेरी ", ज्ञान भारती " द्वारा देश रक्षा अंक एवं अनेक पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से असंख्य रचनाएँ प्रकाश में आयीं. विदेशी आक्रमणों के विवेचन में हम स्पष्ट कर चुके हैं कि पाकिस्तान के आक्रमण के समय उनकी रचनाएँ प्रकाश में नहीं आयी जितनी चीन

के आक्रमण से आयी थीं, इलाचन्द जोशी ने इस आक्रमण के समय कहा भी है कि " चीनी आक्रमण की जो पहली प्रतिक्रिया किसी भी भावनाशील लेखक के अन्तर में होती है वह यह है कि यह आक्रमण सभ्यता के आदिकाल से लेकर आजतक निरंतर विकसित होते रहने वाले समस्त मानवीय मूल्यों पर करारा प्रहार है । " [1]

डॉ० मदनगोपाल गुप्त ने चीनी आक्रमण के समय अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है " वास्तव में नवोदित गणराज्य में भारत के नवनिर्माण तथा उत्थान के लिए उक्त सांस्कृतिक चेतना को जगाने की महान आवश्यकता थी जिसके साथ ही यह भी अपेक्षित था कि आज से कुछ वर्ष पूर्व तिब्बत हस्तगत करते समय भारत की स्वतंत्रता को आपदस्थ करने वाले चीन के प्रथम आक्रमण के समय देश-रक्षा की रचनायें आज की भाँति बहुत मात्रा में लिखी जातीं किंतु यह स्मरणीय है कि प्रगतिवाद का स्वर अलापने वालों ने उस समय " हिन्दी चीनी भाई-भाई " वाली रचनायें ही लिखीं "[2]

चीनी आक्रमण के समय इस समय की राष्ट्रीय चेतना दिखाई पड़ती है, इसमें हम संदेह नहीं कर सकते कि कवियों ने संकट के समय अपने कर्तव्य को पहचाना है किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है कि यह चेतना कुछ समय के लिए उदय हो और क्षिप्रगति से आगे बढ़ती हुई क्षीण हो जाय, परन्तु इसके स्वर को अधिक सतेज बनाने के लिए व्यवस्थित प्रयत्नों की आवश्यकता है.

इसमें संदेह नहीं कि इन वीरकाव्यों की सम-सामयिक रचनाओं ने पाकिस्तान के साथ हुए युद्धों में प्रेरणा का कार्य

---

1. ज्ञान भारती : देश रक्षा अंक, वर्ष 4, अंक-4, फरवरी 1963, पृ. 19.

2. वही, पृ. 194

किया, हमारे आलोच्य युग के पश्चात् हुए पाकिस्तान और बंग देश के युद्धों के अवसर वीरोल्लास भरी सहस्त्रों मुक्तक तथा किसी घटना को लेकर आख्यान निबद्ध ताज़ा रचनाएँ आयीं, अतः यह तथ्य भी हमारे आलोच्यकालीन वीर काव्यों की परंपरा की परवर्तीकालीन अवस्थिति का द्योतक कहा जा सकता है, जैसाकि हम पहले भी दृष्टिगत कर चुके हैं कि यह वीर काव्य धारा 1965 के बाद भी प्रवहमान रही जिसका संकेत ऊपर किया जा चुका है, श्यामनारायण पाण्डेय कृत " शिवाजी महाकाव्य ", श्री कृष्ण सरल कृत " चन्द्र-शेखर " आजाद " एवं " सुभाषचन्द्र बोस ", श्यामनारायण प्रसाद कृत " गुरु गोबिन्द सिंह " आदि महाकाव्य, केदारनाथ मिश्र " प्रभात " राष्ट्र पुरुष एवं बिजेन्द्र अवस्थी का " सिंहगढ़ विजय " इस युग की प्रमुख उपलब्धियाँ कही जा सकती हैं ।

आशा है कि परवर्ती वीर काव्यों की साहित्य सामग्री भावी शोधों का पथ प्रशस्त करेगी ।